HIN1B09a_cours-12-2013-04-22 (jeu de rôles)

शादी अपनी मर्ज़ी से या माता-पिता की मर्ज़ी से?

यूरोप

यूरोप में शादी एक निजी मामला है। माता-पिता को इस मामले में दख़ल देने का कोई हक़ नहीं होता। जवान लोग अपनी मर्ज़ी से शादी करते हैं। लड़के शादी के लिए ख़ुद अपनी पसन्द की लड़की चुनते हैं और लड़कियाँ अपनी पसन्द का लड़का। वे ख़ुद ही यह तय करते हैं कि उन्हें शादी कब करनी चाहिए। आम तौर पर शादी बीस-पच्चीस साल की उम्र में होती है, पर आजकल लोग तीस साल से पहले शादी नहीं करना चाहते। आजकल शादी से पहले कोई नौकरी खोजना बहुत ज़रूरी माना जाता है। जवान लोगों के अनुसार शादी से पहले लड़के-लड़की के बीच प्रेम होना बहुत ज़रूरी है। अगर प्रेम नहीं, तो फिर शादी कैसे हो सकती है? हालाँकि माता-पिता अपने बच्चों को शादी के बारे में सलाह देना चाहते हैं, फिर भी वे चुप रहते हैं। शादी के बाद ज़्यादातर लोग अपना नया घर बसाकर अलग रहते हैं, लेकिन यह बहुत मुश्किल होता है। माता-पिता कभी-कभी अपने बच्चों की मदद भी करते हैं, लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता।

भारत

लेकिन भारत जैसे देशों में आज भी माता-पिता ही अपने बच्चों की शादी तय करते हैं। भारत में माता-पिता को अपने बच्चों के भविष्य के बारे में बहुत चिन्ता होती है। जैसे ही बेटे-बेटियों की उम्र सोलह साल की होती है, माँ-बाप उनकी शादी के बारे में सोचने लगते हैं। वे उचित वर या वधू की तलाश शुरू कर देते हैं। वे अपने रिश्तेदारों तथा दोस्तों से इस मामले में मदद माँगते हैं। चूँकि माता-पिता ही वर या वधू खोजते हैं, अतः अक्सर शादी से पहले लड़के-लड़की एक-दूसरे को नहीं जानते। आजकल बड़े शहरों में माता-पिता लड़के-लड़कियों को एक-दूसरे से मिलने की इजाज़त दे देते हैं, लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता। इसी वजह से कभी-कभी लड़के-लड़कियों की बेमेल शादियाँ हो जाती हैं। माता-पिता को ख़ासकर अपनी बेटी की शादी की चिन्ता ज़्यादा होती है क्योंकि शादी के बाद लड़की माँ-बाप का घर छोड़कर चली जाती है जबकि लड़का माता-पिता के साथ ही रहता है। लड़का ही गृहस्थी का ज़िम्मेदार बनता है।

(1) आपके अनुसार शादी माता-पिता की मर्ज़ी से होनी चाहिए या अपनी मर्ज़ी से?
(2) शादी कब करनी चाहिए?
(3) शादी के बाद नया घर बसाना ज़रूरी क्यों है?
(4) भारतीय तरीक़े की शादी के बारे में आपके क्या विचार हैं?